हमारे स्कूल में घंटी का मतलब

साधारणतया स्कूलों में दिन की शुरूआत ही घंटी के साथ होती है, सबसे पहले प्रार्थना की घंटी, फिर प्रार्थना समाप्त होने की घंटी, पहला विषय शुरू होने की घंटी, दूसरा विषय शुरू होने की घंटी, टीफिन करने की घंटी, खेलने की घंटी, घर जाने की घंटी आदि। इस तरह बच्चों के पूरे दिन को इन घंटियों के साथ शुरू करके इन्ही के साथ खत्म कर दिया जाता है, कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों के हर काम को करने के लिए एक समय शिक्षकों द्वारा निर्धारित कर दिया जाता है, जिस कारण बच्चा शिक्षकों द्वारा निश्चित उस काम को मन हो या न हो उस वक्त पर करता है, और रूचि होने के बावजूद उस काम को उतनी ही देर तक कर सकता है, जितना समय उस काम के लिए निर्धारित किया गया है। इसे बच्चों को यांत्रिक बनाने का प्रयास कहा जा सकता है। परिणामस्वरूप कई बार ऐसा होता है कि बच्चे किसी प्रश्न पर अटके होते है पर चूंकि समय समाप्त हो चुका होता है वे उस समस्या को हल नहीं कर पाते और उन्हें दूसरा विषय पढ़ना पड़ता है। इस तरह बच्चों

की रूचि को अघात तो लगता ही है साथ ही बच्चों और शिक्षकों का तालमेल भी टूट जाता है।

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों एवं शिक्षकों की इसी समस्या पर ध्यान देते हुए घंटी प्रथा को नहीं अपनाया गया है। हमारा मानना है, कि बच्चों की रूचियोँ को समय में निर्धारित करके एक पांबदी के माहौल में पढ़ाने से कही बेहतर उन्हें स्वतंत्र माहौल में पढ़ाना है। हमारा मानना है कि यदि हम बच्चों को उनकी इच्छा के अनुसार पढ़ने की आजादी देंगे तो वह उन चीजों को कहीं बेहतर तरीके से सीख सकेंगे। हमारे यहँ बच्चों पर समय की कोई पाबंदी नहीं होती है, बच्चें किसी काम को तब तक कर सकते है जब तक वे उसे करना चाहते है इसका परिणाम यह होता है, कि वे पढ़ने में रूचि तो लेते ही है साथ ही इसका आनंद भी उठाते है। अतः कहने का तात्पर्य यह है, कि समय की स्वाधीनता ही बच्चों में ज्ञानार्जन की सबसे बड़ी शर्त है। आप सोच रहे होंगे की यह सम्भव कैसे होता होगा? अन्य स्कूलों मे जहाँ घंटी से समय को बाँटकर कालांश बनाए जाते हैं और प्रत्येक कालांश के लिए अलग–अलग शिक्षक आता है वहीं हमारे स्कूल में एक ही अध्यापक होता है। एक ही अध्यापक बच्चों के आने से लेकर छुट्टी तक सभी

विषय पढ़ाता है। अतः बच्चे और शिक्षक मिलकर अपने समूह (कक्षा) के कामों का समय अपनी रूचि के अनुसार तय करते रहते है। इससे जहाँ बच्चों और शिक्षक का आपसी रिस्ता मजबूत होता है वहीं एक दूसरे को जानने का अधिक समय मिलता है। जिसका फायदा बच्चों की शैक्षणिक समस्याओं को समझने व उनका सही हल तलासने में मदद मिलती है।

उदाहरणस्वरूप :– मुख्यधारा की स्कूलों में यदि गणित का विषय चल रहा है, शिक्षक और बच्चे इस पर अभी और 20–30 मिनट देना चाहते है, परन्तु समय समाप्त होने की घंटी बज जाने के कारण उन्हें वह विषय वहीं छोड़ देना पड़ता है, और संस्कृत के श्लोक (दूसरे विषय की तैयारी) याद करने पड़ते है।

परन्तु "उदय सामुदायिक पाठशाला" में शिक्षक एवं बच्चे किसी विषय पर वे जितना चाहे उतना समय दे सकते है, क्योंकि उनमें समय समाप्त होने का डर नहीं होता है।

हमारे स्कूल में घंटी का मतलब